International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 783-785

प्रवासी पंजाबियों का संस्कृत साहित्य को योगदान

धर्मपाल
Dr. Dharmpal Teacher in Government High school Ramghar Samba Jammu and Kashmir, India

प्रस्तवना

प्रायः प्रत्येक मनुष्य अपना उत्कर्ष चाहता है इसी उत्कर्ष के लिये वह अपने गाँव, प्रदेश एवं देश से अन्यत्र जा करके अभ्युत्थान को दृष्टि में रख करके वहीं बस जाता है या कुछ कालपर्यन्त के लिये अपने गाँव, देश, प्रदेश का त्याग करता है उसे ही हम प्रवासी शब्द से अभिहित करते हैं। ठीक यही परिस्थिति पंजाबी भारतियों के लिये भी मानी जा सकती हैं। पंजाब के मूल निवासी तथा संस्कृतविद जो पंजाब से अन्यत्र जाकर अपने कार्य विशेष में लग गये हैं या अन्यत्र बस गये है अथवा दूसरे प्रदेशों में जन्मे हैं एवं पंजाब प्रदेश में आकर के जो संस्कृत शिक्षण में लगे हुये हैं उन्हें भी प्रवासी पंजाबी की कोटि में परिगणित किया जा सकता हैं। ऐसे ही विद्वानों में जम्मू विश्वविद्यालय के डॉ० जागीर सिंह, एवं पंजाब में जन्मे डॉ० सत्यव्रत शास्त्री, श्री बृजनन्दनमिश्र, श्री रामशरण शास्त्री, डॉ० शिव प्रसाद भारद्वाज, श्री जगदीश झा, डॉ० बहादुर चन्द छाबड़ा, पण्डित जगतरामशास्त्री दामोदर झा, डॉ० कृष्ण मुरारी शर्मा।

डॉ० जगदीश प्रसाद सेमवाला श्री पशुपति झा, डॉ० नरेश कुमार, धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता, डॉ० ओम प्रकाश शर्मा सुबन्धु, डॉ० गिरीश चन्द्र ओझा, कृष्ण लाल सूदन, डॉ० मथुरादत्त पाण्डेय, डॉ० वेदप्रकाश उपाध्याय, प्रोफेसर लेखराम शर्माद्व डॉ० राजेश्वर मिश्रा आदि को प्रवासी पंजाबियों की ..... से अंकित किया जा सकता है, क्योंकि इन्होंने जो संस्कृत सम्बन्धी शिक्षण कर्म एवं लोखन कर्म से पंजाब संस्कृत साहित्य लाभावित्त तो हुआ ही है, अतएव उक्त विद्वानों के सृजन कर्म को भी पंजाब के संस्कृत साहित्य का योगदान में रखा जा सकता है।

डॉ० जागीर सिंह का जन्म भी पंजाब में 1950 में हुआ। अध्ययनोपरान्त वह जम्मू विश्वविद्यालय में रीडर के पद् पर आसीन है। इन्होंने कश्मीर शैव दर्शन में बहुत ही महनीय कार्य किया है। इनकी 3 प्रमुख कृतियाँ हैं – प्रत्यभिज्ञा हृदय एवं वेदान्तसार के सन्दर्भ में कश्मीर अद्वैत शैव दर्शन और अद्वैतवेदान्त दर्शन एक पर्यवेक्षण, (2) ईश्वर प्रत्यभिज्ञा और सांख्यकारिका के आधार पर प्रत्यभिज्ञ सिद्धान्त तथा सांख्य दर्शन का अध्ययन, (3) उत्पलदेव और अद्वैत शैव भक्ति वर्तमान में यह तालाब तिल्लो जम्मू में रह रहे हैं, इसके कारण हम इन्हें प्रवासी पंजाबी कह सकते हैं।

डॉ० सत्यव्रत शास्त्री का जनम ज़िला होशियारपुर के आहियापुर ग्राम में 29 सितम्बर 1930 को हुआ। शास्त्री जी को संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा पंजाबी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। इन्हें 1968 में साहित्य आकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा 1974 में दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन ने इन्हें साहित्य कला परिषद् से सम्मानित किया।

श्री 'गुरु गोबिन्द सिंह' चरितम के लिए दिल्ली सिख गुरुद्वारा बोर्ड ने इन्हें सम्मानित किया। 1985 में भारत के राष्ट्रपति ने इन्हें सम्मान पत्र दिया। शास्त्री जी ने अनेक अति महत्त्वपूर्ण वेदों को सुशोभित किया है। ये विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान पंजाब विश्वविद्यालय होशियारपुर में प्राध्यापक रहे। सत्यव्रत शास्त्री जी ने राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय स्थर की सेमीनार में भाग लिया। इन्होंने देश विदेशों में जाकर अपनी विद्वत छाप छोड़ते हुए भारत को गौरवन्वित किया।

शास्त्री सत्यव्रत की प्रमुख कृतियाँ श्री गुरु गोबिन्दसिंह चरितम, शर्मण्यदेश सुतरा विभाति, इन्दिरा गाँधी चरितम, श्री रामकीर्तिमहाकाव्यम् इत्यादि है। शास्त्री जी इस समय दिल्ली में रह रहे है। इस कारण यह प्रवासी पंजाबी हुए।[1]

श्री व्रजनन्दन मिश्र मिथिला के दभाडी ग्राम में जन्में। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान श्री ब्रजनन्दन व्याकरण और साहित्य के मर्मज्ञ थे। इन्होंने विश्वेश्वरानन्द विश्व बन्धु संस्थान पंजाब विश्वविद्यालय होशियारपुर में कार्य किया और 3 अप्रैल 1978 को वहीं से सेनानिवृत हुए। इन्होंने कथा शोध निबन्ध कविता आदि विषय पर कार्य किया। दस पद्यों की रचना उद्बोधनम्[2] ग्यारह पद्यों की रचना भगवदज्जुदा[3] और शोकाञ्जलि[4] तथा पाँच पद्यों की रचना उगारा[5] इनकी काव्यरचनाएँ प्रकाशित है। यह मिथिला का त्याग हर पंजाब में बसे हैं इस कारण यह भी प्रवासी पंजाबी हुए।

श्री रामशरण शास्त्री का जन्म पंजाब प्रदेश में हुआ एवं राजकीय उच्च विद्यालय बरनाला में अध्यापक का कार्य किया।[6] इनकी प्रमुख कृति जवाहर जीवनम् एक सुन्दर काव्य है।

डॉ० शिव प्रसाद भारद्वाज का जन्म पौड़ी गढ़वाल जिला उत्तरप्रदेश में हुआ। इन्होंने शास्त्री परीक्षा संस्कृत विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने वाल्मीकि रामायण काव्यशास्त्र का उपजीव्य विषय पर शोध कार्य कर के पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने 1959 से विश्वेश्वरनन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में अध्यापन का कार्य किया एवं भारत भारती अनुशोलन संस्थान होशियारपुर में प्राध्यापक रहे।[7] इनकी रचनाएँ समागता वसन्तपंचमी[8] शरत्कालःसमायातः[9] गीतम्[10] रतिः शाशवती[11] आशंसा[12] अभिनवरागगोविन्दम्[13] मत्स्यरामायण विशंति[14] श्वेःतनया[15] इत्यादि रचनाएँ प्रसिद्ध है। सेवानिवृत होने के पश्चात् अब शिवप्रसाद जी देहरादून में रह रहे हैं। इस कारण यह भी प्रवासी पंजाबी हुए।

श्री जगदीश झा बिहार में उत्पन्न हुए एवं विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान, साधु आश्रम होशियारपुर इनकी कर्मस्थली रही। यही से सेवानिवृत हुए एवं सेवानिवृत होने के पश्चात् पंजाब में ही रहने लगे। इस काण यह प्रवासी पंजाबी है। पाँच पद्यों की रचना श्रद्धाञ्जलि, [16] छः पद्यों की रचना गीतिका, [17] तथा नौ पद्यों की रचना उद्बोधनम्[18] इनकी प्रमुख कृतियाँ है।

डॉ० बहादुरचन्द छाबड़ा का जन्म वर्तमान पेशावर के निकट कोहाट गाँव में 3 अप्रैल 1908 को हुआ इन्होंने पंजाब विश्व विद्यालय लाहौर से 1926 में शास्त्री, 1929 में बी०ए, 1931 में एम०ए० परिक्षाएँ उत्तीर्ण की। डॉ० छाबड़ा ने अपनी अपनी विद्वता के कारण

पंजाब का नाम उज्जवल किया। ये पुरातत्व विभाग के डायरैक्टर पद से सेवानिवृत हुये। वैराग्यजीवनम्[19] प्रंकीणा:[20] आत्मोद्धार[21] देहीति दीन वच:[22] पर्जन्य प्रति:[23] अग्रवाल कीति:[24] दयानन्दभिनदनम्[25] पुष्पहासः आनन्द[26] आदि इनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ है।

पं० जगदराम शास्त्री का जन्म हिमाचल प्रदेश चिन्तपुरनी के निकट लुहारा ग्राम में 1902 ई० को हुआ पण्डित जगतराम शास्त्री संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान थे। शास्त्री जी सनातन धर्म कॉलिज होशियार पुर में प्राचार्य रहे नैषधीयचरित एवं नागानन्द नाटक पर इनकी प्रसिद्ध टीकायें हैं।

'स नाथोबालानां सततमवतात सिद्धपदमाउ'[27] नामक आठ पद्यों की एक काव्य रचना उपलब्ध मिलती है। संस्कृत संगीत रामायण तथा मदनचरितम् नामक पञ्चसर्गात्मक काव्य रचनाएँ अप्रकाशित है। इनकी कुछ अन्य रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ इनकी कृष्णकान्ता भारद्वाज के पास सुरक्षित है। हिमाचल प्रदेश का त्याग करके होशियार में रहने के कारण शास्त्री जी भी प्रवासी पंजाब कहलायेंगे। डॉ० दामोदर झा सम्भवतः बिहार प्रदेश के निवासी होंगे क्योंकि झा नामक जाति बिहार में ही प्राप्त मिलती है। ये विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु भारत भारती अनुशीलन संस्थान पंजाब विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं। डॉ० झा दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष और साहित्य के प्रखर विद्वान हैं। इन्होंने पंजाब में रहकर ही संस्कृत की सेवा की। ग्रीष्मसंताप[28] तथा संस्कृतम्[29] पाँच पद्यों की रचनायें हैं, संरक्ष्यंसंस्कृतम्[30] इनकी 16 पद्यों की कृति हैं भूयाद्वसन्तोत्सव[31] तथा अभिनव सत्तपदी[32] भी इन्हीं की काव्य कृत्तियाँ हैं।

डॉ० कृष्ण मुरारि शर्मा का जन्म राजस्थान के ज़िला भरतपुर के एक ग्राम में हुआ। ये पंजाब विश्वविद्यालय साधु आश्रम, होशियारपुर में अनुसन्धाता है। गीतम[33] एक पृष्ठात्मउगान, त्वञ्च अहञ्च[34] कविता होरोदिसि किम् भारतभाता[35] तथा शैवालोत्सारणस्य मूल्यम्[36] इनकी काव्यरचनाएँ हैं। राजस्थान से आकर पंजाब भूमि को कर्मस्थली बनाने के कारण डॉ० कृष्णमुरारि शर्मा को भी प्रवासी पंजाब कह सकते है।

डॉ० जगदीश प्रसाद सेमवाल का जन्म उत्तरप्रदेश में चमोली के कोदार नाथ विकासखण्ड में स्थित ह्यूण गुप्तकाशी में 1944 को हुआ। डॉ० सेमवाल साहित्य, दर्शन, व्याकरण, आदि विषयों के पारंगत विद्वान है। इन्होंने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने 'रसभावदृष्टयाभाव प्रकाशनस्य समीक्षात्मक मध्ययनम्' विषय पर शोधकार्य करके पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से 1984 में पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इस समय सेमवाल जी वि०वि०भा०भा०अ० सं० पंजाब विश्वविद्यालय में सेवा कर रहे हैं। साहित्य की काव्य और नाट्य दोनों विधाओं में यह दक्ष थे। 'यमनचिकेतसीयम' तथा सुरभारतक्रन्दनम् इनके महत्त्वपूर्ण नाटक है। 'शिक्षा'[37] रामस्य वैदेही विरह'[38] तथा 'सेयं पञ्चनदीय भूमिणयते वेदत्रयी जन्मभू:'[39] इत्यादि इनकी काव्य रचनाएँ है। उत्तरप्रदेश से आकर पंजाब विश्वविद्यालय में कार्य करने के कारण एवं नहीं रहने के कारण यह भी प्रवासीय पंजाबियों को कोटि में आते हैं।[40] श्री पशुपति झा का जन्म (साँढा) नेपाल में 27 अप्रैल 1930 को इनके पिता श्री कृष्णानन्द झा तथा मुद्रिकादेवी थी। प्रारम्किउ शिक्षा नेपाल के राजदीप संस्कृत महाविद्यालय जनउपुर धाम में हुई। श्री पशुपति झा ने 1963 से 1990 तक वि०वि०भा०भा०अ० सं पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर में अध्यापन कार्य किया।[41] 'शृङ्गारहारावली' नेपाल साम्राज्योदयम्, वाताहवानम्[42] इनकी प्रमुख काव्य कृत्तियाँ हैं। पंजाब विश्वविद्यालय में रहने के कारण यह भी प्रवासीय पंजाबी हुए। डॉ० नरेश कुमार का जन्म अक्तूबर 1959 में उत्तरप्रदेश में हुआ इनके पिता श्री श्याम लाल तथा माता श्रीमती कमला देवी है। इन्होंने 'भारतीय दर्शन के प्रतिपादक में पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का योगदान विषय पर 1992 में शोधकार्य करके पंजाब विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने अप्रैल 1980 से सितम्बर 1992 तक श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल जिला जलन्धर में आचार्य के रूप में सेवाकार्य किया। वर्तमान समय में डॉ० नरेश कुमार दो आबा कॉलिज जलन्धर में प्रवक्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं। 'ईश्वरस्तुत्यणकम्'[43] 'ब्रह्मर्षिविरजानन्दाणकम्'[44] 'गुरुकुल परिचय दशकम'[45] 'ईश्वरत्तोत्रम'[46] तथा 'अयि दिव्यमातृभूमे'[47] इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। पंजाब में रहने के कारण इनको भी प्रवासीय पंजाबी कह सकते है। डॉ० धमेन्द्र कुमार गुप्त का जन्म रायपुर मध्यप्रदेश में हुआ किन्तु इनकी सम्पूर्ण कर्मभूमि पंजाब रही। गुप्त जी ने 1966 तक पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में सेवाकार्य। इस विश्वविलय में ये संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे तथा भाषा संकाय के हीन थे। पंजाब में रहने के कारण यह प्रवासी पंजाबी हुए। इसलिए यह कहा जस सकता है कि प्रवासी पंजाबियों ने संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना महनीय योगदान दिया है।

सन्दर्भ

1. वि०सं० 15, नव 77–फर, पृष्ठ 78,93
2. वि०सं० 4, नव 66, पृष्ठ 69–70
3. वि०सं० 8, नव 70, फर 71, पृष्ठ 15–16
4. वही 76
5. वि०सं० 15, नव 77–फर, पृष्ठ 78,95
6. द्रष्टव्य रामशरण शास्त्री जवाहरजीवनम्, वरनालाः सेवक सद्यं, वि० संवत 2023, 86–88
7. शिवप्रसाद भारद्वाज, अभिनवरागगोविन्दम्, होशियारपुर, श्रीमति भगवानदेवी भारद्वाज, 1979, अन्तिम पृष्ठ
8. वि०सं० 4, फर 67, पृष्ठ 123
9. वि०सं० 4, फर 67, पृष्ठ 365
10. वि०सं० 7, नव 69, फर 70, पृष्ठ 45–46
11. वि०सं० 8, नव 70, फर 71, पृष्ठ 54–55
12. वि०सं० 9, नव 71, फर 72, पृष्ठ 138
13. वि०सं० 17, नव 79, फर 80, पृष्ठ 34
14. वि०सं० 18, मार्च 81, पृष्ठ 4–44
15. वि०सं० 19, मार्च 82, पृष्ठ 2
16. वि०सं० 4, फर 67, पृष्ठ 152
17. वि०सं० 7, नव 69, फर 70, पृष्ठ 91
18. वि०सं० 9, नव 71, फर 72, पृष्ठ 114–115
19. वि०सं० 4, फर 66, पृष्ठ 22
20. वि०सं० 4, मई 67, पृष्ठ 106
21. वि०सं० 5, मई 68, पृष्ठ 106
22. वि०सं० 5, मई 68, पृष्ठ 206
23. वि०सं० 9, नव 71, फर 72, पृष्ठ 42
24. बहादुरचन्द्र चोपोत्कट, अग्रवा लकीति, Jagannath Agarwal & Elicitation Volums Recent Studies in Incans prit Delhi: Ajanna Publications 1982, 13.
25. वि०सं० 20, सित–दिस 83, पृष्ठ 8
26. वि०सं० 22, मार्च 85, पृष्ठ 116
27. वि०सं० 5, मई 68, पृष्ठ 263–164
28. वि०सं० 5, फर 68, पृष्ठ 195
29. वि०सं० 19, दिस० 82, पृष्ठ 10
30. वि०सं० 20, सित–दिस 83, पृष्ठ 81

31. वि०सं० 22, मार्च 85, पृष्ठ 26
32. वि०सं० 22, सितं–दिस 85, पृष्ठ 26
33. वि०सं० 10, नवं० 72, अग 73, पृष्ठ 87
34. वि०सं० 19, सितं० 82, पृष्ठ 78
35. वि०सं० 20, मार्च 83, पृष्ठ 64
36. वि०सं० 20, सितं–दिस 83, पृष्ठ 95–96
37. वि०सं० 11, वि 73, अग 74, पृष्ठ 45–52
38. वि०सं० 24, सितं–दिस 87, पृष्ठ 30–32
39. वि०सं० 13, नवं 75, फर 76, पृष्ठ 17–19
40. वि०सं० 15, नवं 77, फर 78, पृष्ठ 13–17
41. वि०सं० 13, मई अग 76, पृष्ठ 53–54
42. वि०सं० 26, सितं 89, पृष्ठ 1–6
43. यज्ञयोगज्योति, सितं 79, पृष्ठ 12–14
44. वही, एब्स्ट्रैक्ट प्रति ही उपलब्ध है, पृष्ठ 15–17
45. वही, एब्स्ट्रैक्ट प्रति ही उपलब्ध है, पृष्ठ 18–23
46. वही, एब्स्ट्रैक्ट प्रति ही उपलब्ध है, 6ध्12ध्79
47. वेदसुधा, अंक–5, अक्तु० 84, मुखपृष्ठ